गुप्तकाल में सामन्तवाद का विकास

डॉ. शीला कुमारी

गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है। मौर्यों के पतन के पश्चात् नष्ट हुई भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित किया तथा लगभग सम्पूर्ण भारत को एक राजनीतिक छत्र के अधीन कर शक्तिशाली विदेशी आक्रान्ताओं का सफलतापूर्वक सामना कर भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखा। इस युग में भारत ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अपार उन्नति की। विदेशी लेखकों द्वारा भी प्रशंसित सुखी एवं समृद्ध समाज की स्थापना, वृहतर भारत की अवधारणा की क्रियान्विति, गुणग्राहकर्ता, धर्म–सहिष्णुता, इस युग की प्रमुख देन थी। सांस्कृतिक उन्नति होने के कारण इस युग के विषय में जानने के लिए विभिन्न प्रकार के सामग्री उपलब्ध हैं, जैसे, साहित्यिक, अभिलेखीय, मुद्राएँ, मुहरें, स्मारक इत्यादि।

गुप्तकालीन शासन व्यवस्था से विस्तृत जानकारी मिलती है। इन्हीं माध्यमों से ज्ञात होता है कि गुप्त शासकों ने अपने विस्तृत साम्राज्य में अत्यंत सुदृढ़ शासन की स्थापना करके अपनी विजयों को स्थायी बना दिया। गुप्त राजाओं ने अपने पूर्वगामी शासकों के शासन प्रबंध को अपनाते हुए उसमें कुछ आवश्यक परिवर्तन कर उसे समायानुकूल बनाया।